तरुण भारत संघ

प्रगति प्रतिवेदन 2000–2001

महिलाओं में जागा आत्मविश्वास

तरुण शाला में बालिकाएँ पढ़ती हुई

बालिका मेला में बालिकाएँ चित्रकारी करती हुई

तरुण भारत संघ की दृष्टि - महिला विकास

तरुण भारत संघ राजथान के अलवर, जयपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, दौसा जिलों के लगभग 750 गांव में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, प्राकृतिक संसाधनों के संवर्द्धन के कार्य समाज के प्रत्येक वर्ग महिला, पुरुष, बच्चे, वृद्ध जनों के साथ मिलकर 17 वर्षों से कार्य कर रहा है। तरुण भारत संघ ने इस क्षेत्र में 1985 से ही महिलाओं से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों को उठाया है तथा महिलाओं से जुडी समस्याओं पर गहनता से विचार विमर्श करके उनकी समस्यओं के निराकरण के लिये कार्य किये हैं। तरुण भारत संघ यह मानता है कि जब तक हमारी गांव की महिलाओं की सामाजिक कार्यों में भागीदारी नहीं बढ़ेगी तथा शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक रूप से महिलाएं स्वावलम्बी नहीं बनेगी तब तक हम चाहे कितना भी विकास कर लें हम विकसित नहीं हो सकते। तरुण भारत संघ के प्रत्येक कार्य की पूर्ण सफलता में महिलाओं की अहम भूमिका रहीं है। चाहे प्राकृतिक संसाधनों के संवर्द्धन में हो या शिक्षण व आर्थिक बदलाव में। इन सब कार्यों में आगे आकर यहां की महिलाओं ने अन्याय व अत्याचार के खिलाफ आन्दोलन किये हैं। चाहे खानों की लड़ाई हो चाहे जंगलात वालों के साथ इन सब कार्यों में महिलाओं ने अहम भूमिका निभाई है।

महिला सबलीकरण क्यों ?

तरुण भारत संघ हमेशा ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक शैक्षणिक दृष्टि से मजबूत बनाने हेतु संकल्पित रहा है। त. भा. स. महिलाओं में जागृति लाकर उन्हें गाँव राष्ट्र की पुनर्निर्माण में सहभागी बनाना है। महिलाओं के जीवन से जुड़ी कुछ समस्याओं को हल करना जरुरी है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से महिलाओं के जीवन में सामाजिक व आर्थिक रूप से बदलाव आ सकता है। यही काम तरुण भारत संघ ने सबसे पहले शुरू किया। जिससे जल संरक्षण के काम से महिलाओं के जीवन में आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक परिवर्तन आया है। इस काम को सम्पादित करने के लिये तरुण भारत संघ ने यू. एन. डी. पी. की मदद ली है। यू. एन. डी. पी. ने तरुण भारत संघ को प्राकृतिक संसाधनों व महिला सबलीकरण हेतु 1999 से आर्थिक मदद देना शुरू किया। जिससे इस काम को करने में शक्ति मिली है। भीकमपुरा स्थित तरुण भारत संघ उन चुनिन्दा स्वैच्छिक संस्थाओं में से एक है। जिसने जल, जंगल व शिक्षा के प्रति ग्रामीण महिलाओं

की जिन्दगी में सामाजिक एवं आर्थिक क्रान्ति लाने का कार्य किया है। आज चारों तरफ महिलाऐं, बच्चे, पुरुष सभी खुशहाली के गीत गा रहे हैं। उन्हें पशुओं के लिये चारा, दूध, अनाज, सब्जी सब कुछ आसानी से मिल रहा है और इनमें शिक्षा बढ़ी है। और साथ ही स्वतन्त्रता, समानता सामूहिकता, भाईचारा यहां के लोगों में आसानी से देखा जा सकता है। तरुण भारत संघ के साथ सब लोग मिलकर सामाजिक कार्यों में तन-मन-धन के साथ बराबर की भागीदारी निभाते हैं। महिलाओं की भागीदारी सामाजिक कामों में सबसे ज्यादा बढ़ी है। महिलायें अब अपने घरों से निकलकर बाहर जाने लगी है। और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं और अपने बालक-बालिकाओं को पढ़ाने के लियें आगे आ रही है।

महिला सबलीकरण हेतु महिला स्वयं सहायता समूह का गठन

ग्रामीण महिलाओं के जीवन में सुख-चैन लाने हेतु महिलाओं को जागृत कर उन्हें आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने हेतु तरुण भारत संघ ने यू. एन. डी. पी. के सहयोग से राजस्थान के पाँच जिलों (दौसा, अलवर, जयपुर सवाई माधोपुर, करौली) में अब तक 266 स्वयं सहायता समूहों को विभिन्न बैंको से जोड़कर उन्हें रोजगार हेतु ऋण दिलाया है। ये महिला समूह स्वयं संचालित है और अब तक 13 लाख रुपया इकट्ठा किया जा चुका है। महिलायें गांव में ही पैसे उधार में देती हैं। हर महीने महिला समूह की बैठकें होती है। जिसमें पैसा जमा, किया जाता है और साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं गाँव के विकास के बारे में बैठकर निर्णय लेती है महिला समूह के माध्यम से महिलाओं में आत्म विश्वास बढ़ा है जो पहले आंगन में रहती थी अब वह बाहर भी निकलने लगी है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई हैं।

महिला संगठन या समूह क्या है ?

महिला समूह एक ऐसा संगठन है जिसमें एक गाँव में निवास करने वाली विभिन्न धर्म जातियाँ की महिलाऐं भी शामिल हो सकती हैं और वें मिलकर अपना एक सुचारू रूप से नियमित बैठक करती हो तथा अपने गाँव के बारे में अपनी बात रखें व समाज में हर कार्य को करने के लिए आगे आकर अपनी सहभागिता निभाऐं एवं निर्णय दें।

महिला बचत समूह क्या ?

महिलाओं को संगठित करके उनमें नियमियता लाने हेतु एक माध्यम बचत करना है। जिससे महिलाओं को कई फायदों से अवगत कराया जा सकता है। वह प्रतिमाह बचत करने के बहाने बैठेंगी और अपनी दुःख सुख की बात करेंगी, साथ ही आर्थिक बचत करके हर आर्थिक किल्लत से बचेगी। आपसी लेन-देन व हिसाब अपने दिमाग में रखेगी। मीटिंग में नियमित रूप से आने के लिए अपनी भागीदारी निभायेगी। इसी बहाने से उन्हें हर तरह की जानकारियों जैसे - जल, जंगल, जमीन व जड़ी-बूटियों के विभिन्न फायदों के बारे में बताया जा सकता है और साथ ही देशी खाद बीज की उपयोगिता के बारे में बताया जाता है।

महिला संगठन या महिला बचत समूह क्यों ?

महिला बचत समूह या महिला संगठन इसलिये आज जरूरी है तथा इस संगठन को आगे बढाने के लिए जोर दिया जा रहा है। क्योंकि आज भी गाँव की महिलाओं में जानकारी समझदारी व अनुभव बहुत ज्यादा है जितना कि पढ़ी-लिखी महिलाओं को नहीं होता है। बल्कि यह महिलायें अपना अनुभव एवं अपने ज्ञान को समाज में प्रस्तुत नहीं कर पाती है। इसलिए महिलाओं को संगठित कर उनकी क्षमता को बढाने के लिए संगठन या समूह जरूरी है। तरुण भारत संघ जिस तरह का महिला सब्लीकरण चाहता हैं। कि महिलाएं प्राकृतिक संसाधनों जैसे - जल, जंगल, जमीन, स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु महिलाएं अपने घर व परिवार के कार्यों में ही अपनी जिन्दगी सीमित न समझकर अपनी भागीदारी निभाऐंगी व सभी कार्यों में अपना निर्णय रखेंगी।

बहुत से गांवों में महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता है। एक अच्छे समाज में जाने के लिए उन्हें कई तरह की धमकियाँ सहनी पड़ती हैं। इसलिये धीरे-धीरे महिलायें संगठित होकर अपने परिवार से बाहर आकर पड़ोस तक पहुंचेगी और अच्छे समाज में प्रवेश करेगी। इस तरह महिलाऐं धीरे-धीरे बचत समूह के माध्यम से अपनी भागीदारी निभाएगी।

इससे पहले महिलायें समाज में अपना निर्णय नहीं दे पाती और बोल भी नहीं पाती थी। किसी भी समाज का विकास एक दूसरे के अनुभवों के आदान-प्रदान एवं विचार विमर्श से होता है। इसी से सीखा भी जाता है। जहां पर महिलाओं का सहयोग नहीं होता है। वहाँ कार्य अधूरा है।

इसलिये समाज में आज महिला बचत समूह बनाने की आवश्यकता पड़ी।

''नारी के सहयोग बिना, हर बदलाव अधूरा है॥''

''जब नारी समाज जगेगा, शोषण मुक्त समाज बनेगा॥''

महिला समूह के उद्देश्य

1. प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना।
2. महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना।
3. महिलाओं को संगठित कर बालिकाओं को पढाने हेतु प्रेरित करना।
4. महिलाओं की ग्राम सभा में भागीदारी बढ़ाना।
5. महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को रोकना।
6. ग्रामीण महिलाओं को स्वः रोजगार उपलब्ध कराना।
7. महिलाओं को जागृत कर उनको अपने अधिकारों के प्रति जागृत करना।

महिला समूह का पूर्ण विवरण

क्र. सं	जिला	गाँव की संख्या	समूहों की संख्या	सदस्यों की संख्या	मासिक बचत (रुपयों में)
1.	अलवर	81	120	12750	54000
2.	जयपुर	29	31	775	11625
3.	स. माधोपुर	17	50	1000	18750
4.	करौली	26	60	1100	22500
5.	दौसा	3	5	100	1875
	कुल योग	156	266	15725	108750

प्राकृतिक संसाधन के सरंक्षण में महिलाओं की भागेदारी

देश में प्राकृतिक संसाधनों की दिनों दिन हालत खराब होती जा रही है इसीलिये तरुण भारत संघ ने यू. एन. डी. पी. के सहयोग से महिलाओं द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का काम शुरू किया। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव में महिलाओं को संगठित कर उन्हें प्राकृतिक संरक्षण के प्रति जागृति कर उन्हें इस काम में लगाया। अब महिलाऐं स्वयं गांव के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु निर्णय लेने लगी है। जल, जंगल, जमीन, महिलाओं की जिन्दगी के अंग है। उन्हें बचाने के लिये महिलाओं ने अपने गांव स्तर पर (देववनी, धराडी, कांकडबनी) बचाने का काम मिलकर कर रही है। कजोडीमाई राजोरगढ़ की रहने वाली है उसने अपने गांव की महिलाओं को संगठित करके अपने गांव के विकास हेतु गांव की कार्ययोजना बनाकर महिलाओं को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के काम में लगाया। अब वे

सरिस्का के अन्दर बसे मांडलवास, मथुरावट, करांट, पीलापानी आदि गांवों में महिलाओं को जागरूक बनाने हेतु प्रेरित कर रही हैं। उन्होंने अपने गांव की शराब बन्द कराई, जिससे उनके गांव की महिलाओं की जिन्दगी में सुधार आया और अब जो पुरुष शराब पीते थे और अपनी पत्नी को पीटते थे वे अब महिला समूह के साथ मिलकर काम करने को तैयार रहते है और हर काम में उनका साथ देते हैं। उसने अपने गांव में महिलाओं के सहयोग से सरपंच से लड़कर अपने गांव में हैण्डपम्प लगवाया।

महिलाओं की ग्रामसभा में भागीदारी

समाज के एक बडे वर्ग की इस सोच और अशक्ति करण के चलते कि महिलाऐं स्वयं कुछ काम नहीं कर सकती न तो उन्हें कभी आगे आने दिया जाता है और न ही भागीदारी के योग्य समझा जाता है। (21वीं सदी में प्रवेश के बावजूद यह दु:खद लेकिन सत्य है।) तरुण भारत संघ के प्रयासों से महिलायें आत्मविश्वासी एवं शक्तिशाली ही नहीं बल्कि सक्रिय रूप से विकासात्मक गतिविधियों से जुड़ी है। इस क्षेत्र में महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किये गये उदाहरण न सिर्फ इस इलाके के लिये बल्कि देश और सारी दुनिया के लिये अनुकरणीय है। रूपारेल नदी वेशिन में गांव तोलाश माला की महिलाओं ने ग्राम सभा में जाकर एनीकट बनाने हेतु प्रस्ताव पारित करावाया। तरुण भारत संघ से एनीकट बनवाया।

नाँडू गांव की श्रीमती निर्मला बताती हैं कि तरुण भारत संघ के सम्पर्क में आने से आज महिलाओं में काफी परिवर्तन आया है। महिलायें ग्राम सभा की मीटिंग में जाने लगी हैं और अपना निर्णय लेती है और एक दूसरे के सुख दु:ख में भागेदारी बनने लगी हैं। आज गाँव में महिलाओं को हर काम में पूछा जाता है। पुरुष के बराबर महिलायें बात करने लगी हैं। पहले ऐसा नहीं था महिलाओं का पुरुष शोषण करता था। किसी भी काम में महिलाओं की भागीदारी नहीं ली जाती थी। महिलाओं का जीवन बहुत ही कठिन था मगर आज वे चैन से जी रही हैं पुरुष जो कल उन्हें अपने बराबर का दर्जा नहीं देते थे आज वे ही महिलाओं की राय से हर काम करते हैं। चाहे वह रुपये पैसा का काम या खेती बाड़ी का काम हो और चाहे शादी-ब्याह का काम हो महिलाओं को शामिल किया जाता है।

जल और जंगल संरक्षण में महिलाओं की भागीदारी

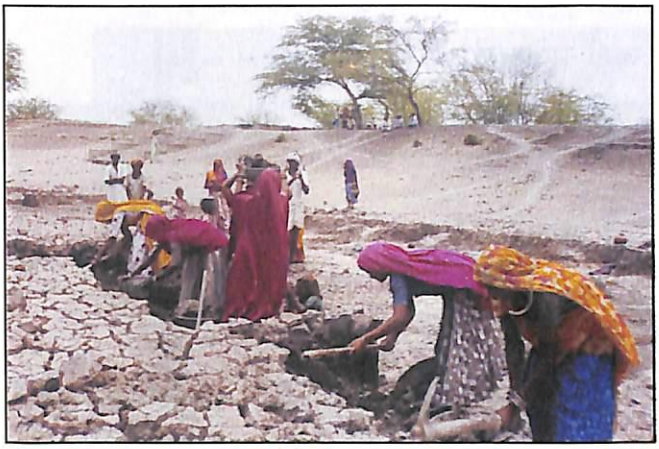

गाँव की महिलायें हमेशा पानी के लिये परेशान रहती थी पूरा दिन पानी भरने में लगता था। अब महिलाऐं समूह के माध्यम से जोहड़ बनाकर अपने गांव का पानी गांव में रोकने का काम कर रही है। कुओं का जलस्तर ऊपर आया, जिससे उनकी परेशानियां कम हुई है। अब उन्हें चारा, अनाज, पानी सब कुछ आसानी से मिल जाता है। राम्यणा गांव की महिला समूह की सदस्याएं ने मिलकर अपने गांव में जोहड़ खोदने का काम किया। उनकी प्रंशसा पूरे गांव में होने लगी है। पहले पुरुष उनके काम में सहयोग नहीं करते थे। अब वो भी उनके काम में सहयोग करते हैं।

गुढ़ा किशोर दास की महिला समूह के सदस्याओं ने पूरे गांव का श्रमदान इकट्ठा करके स्वयं मेहनत करके जोहड़ बनाने का काम किया।

जैव विविधता एवं जंगल संरक्षण

महिलाओं ने महिला समूह के माध्यम से 100 गांव में जैव विविधता एवं जंगल संरक्षण शिविर आयोजित कर लोगों को जागृत करने का काम किया। तरुण भारत संघ ने यू. एन. डी. पी. के सहयोग से महिलाओं को जैव विविधता एवं जंगल संरक्षण हेतु प्रेरित किया है और महिलाओं ने जंगल व जंगली जीवों के संरक्षण हेतु पदयात्रा आयोजित की है। महिलाओं में जंगली जीव, जंगल बचाने हेतु भावना जागी है वे अब खुद जंगल बचाने लगी है। और महिला समूह में हर महीने बैठकर नियम बनाती है। उन्होंने जैव विविधिता संरक्षण हेतु लोगों में स्वयं जंगली जीवों को न मारने, कुल्हाडी, लेकर जंगल में न घूमने, शिकारियों

को पकड़वाने और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा एक पेड़ लगाये जाने सम्बन्धी कानून बनाये। जिन के क्रियान्वयन से ही यह बदलाव आया है।

श्रम से जगा महिलाओं में आत्मविश्वास

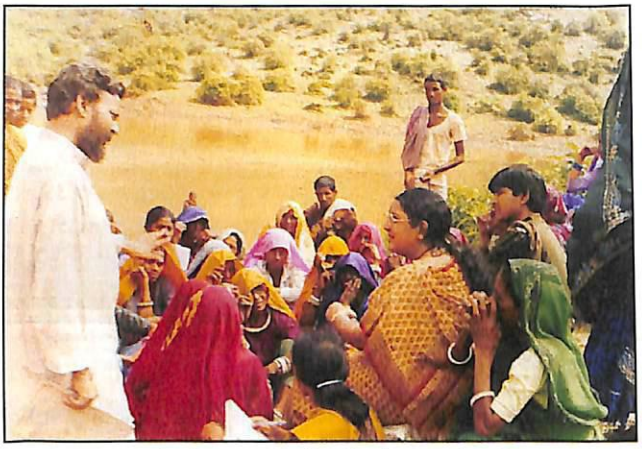

तरुण भारत संघ ने यू. एन. डी. पी. के सहयोग से अब तक 150 गांवों में जन जागृति कर उन्हें श्रमनिष्ठ बनाने हेतु श्रमदान से काम करने की प्रेरणा दी है। श्रमनिष्ठ समाज बनाने में महिलाओं की अहम भूमिका है उन्होंने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, मार्च 2000 से 2001 तक महिला समूह की सदस्यों ने श्रमदान से 200 जोहड़ एनीकटों का निर्माण किया है उदाहरण स्वरूप :- गुढा किशोर दास में मेवामाई की अगुवाई में 50 महिलाओं ने एक जोहड़ का निर्माण किया है, जमुवारामगढ तहसील राम्याणा गांव की 70 महिलाओं ने मिलकर एक जोहड़ का निर्माण किया, राडा गाँव की महिलाओं ने भी दो जोहडों का निर्माण किया है काला लाँका, में तीन जोहडों का निर्माण किया गया है। ऐसे कई उदाहरण है इससे महिलाओं की जिन्दगी में परिवर्तन आया है और उनमें आत्मविश्वास जागा है।

तरुण शाला स्कूल

तरुण भारत संघ अलवर, जयपुर एवं करौली सवाई माधोपुर जिलों में यू. एन. डी. पी. परियोजना के तहत तरुण शालाएं चल रही हैं इन तरुण शालाओं में ग्रामीण इलाके की कामकाजी बालिकायें पढ़ती है। इन्हें पढ़ाने के लिए तरुण भारत संघ ने स्थानीय शिक्षकों का चयन समुदाय की भागीदारी के साथ किया है। शिक्षकों की योग्यता 8वीं से स्नातक तक पढ़े लिखे हैं। समुदाय पढाने के

लिये मकान उपलब्ध कराता है। जिसमें तरुण शाला स्कूल चलती है। तरुण भारत संघ (यू. एन. डी. पी.) द्वारा अब तक 55 स्कूल संचालित है

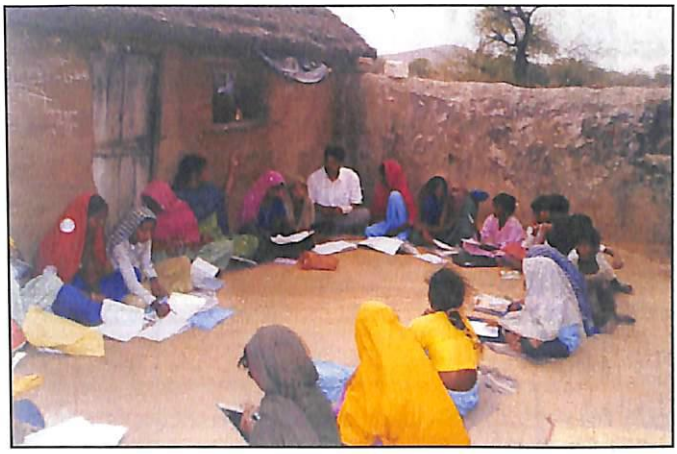

जिसमें ग्रामीण स्तर की 1192 बालिकायें और 475 बालक शिक्षा ग्रहण कर रहे है। तरुण शाला शिक्षकों की मासिक बैठक तरुण भारत संघ में होती है और प्रत्येक छः माह बाद उनका प्रशिक्षण कराया जाता है। गांव के महिला बचत समूह द्वारा तरुण शाला स्कूलों का अवलोकन किया जाता है। समय-समय पर समुदाय व महिला समूह द्वारा स्थानीय स्तर पर मूल्यांकन किया जाता है और समय पर बालिकाओं के बौद्धिक ज्ञान हेतु बालिका मेला का आयोजन किया जाता है, जिसमें खेलकूद, व्यायाम के बारे में सिखाया जाता है। बच्चों को भ्रमण हेतु बाहर ले जाते हैं। बौद्धिक ज्ञान बढ़ाने हेतु बच्चों को कैम्पों में रखा जाता है। जिन्हें विभिन्न प्रकार की जानकारी दी जाती है। जिससे उनमें पढ़ाई की रूचि बढ़ी है।

तरुण शाला स्कूलों का उद्देश्य

- ग्रामीण इलाकों की बालिकाओं को शिक्षित करना।
- बालिकाओं का सर्वांगीण विकास करना।
- बालिकाओं को स्थानीय स्तर तक प्राथमिक स्तर तक पढ़ाई सुलभ कराना।
- बालिकाओं को शिक्षित कर उन्हें बाल विवाह रोकने हेतु प्रेरित करना।
- बालिकाओं में जंगल, जंगली जीव व जल के संरक्षण के प्रति अभिरूचि बढ़ाना।
- ग्रामीण इलाको के 5 से 8 वर्ष के बालक-बालिकाओं को सरकारी स्कूलो से जोड़ना।
- 8 से 16 वर्ष के बालिकाओं का ग्रामीण स्तर पर पांचवी तक की शिक्षा मुहैया कराना।

तरुण शाला अवलोकन

तरुण शालाओं का अवलोकन महिला समूह की सदस्याओं व तरुण भारत संघ कार्यकर्ता द्वारा किया जाता है, तथा ग्राम स्वावलम्बन समिति की पूरी जिम्मेदारी होती है, पूर्ण सुपरविजन ग्राम स्वावलम्बन समिति द्वारा ही किया जाता है।

तरुण शाला स्कूलों का पूर्ण विवरण

क्र. सं	जिले का नाम	तरुण स्कूलो की संख्या	शिक्षिका का नाम	शिक्षक का नाम	बालिका	बालक	कुल योग
1.	अलवर	36	07	29	800	250	750
2.	जयपुर	5	4	1	153	25	178
3.	करौली	8	3	5	200	176	376
4.	सवाईमाधोपुर	6	3	3	39	35	74
योग	4 जिले	55	17	38	1192	475	1529

मासिक बैठके

तरुण आश्रम में प्रत्येक माह तीन दिवसीय शिक्षकों, महिला प्रेरकों की बैठक की जाती है, जिसमें तरुण शाला के सभी शिक्षक व महिला प्रेरक भाग लेते हैं, शैक्षणिक समस्या का मिलकर समाधान करते हैं और अगले महीने की कार्य योजना तैयार करते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण

साल में दो बार शिक्षकों का प्रशिक्षण कराया गया है। पहला मई - 2000 में 10 दिवसीय प्रशिक्षण संधान साथियों ने दिया। मई 2001 में 7 दिवसीय प्रशिक्षण कराया गया, जिसमें करौली, जयपुर, सवाईमाधोपुर, अलवर 80 प्रशिक्षाणियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया, प्रशिक्षण संधान के साथियों ने दिया।

पाक्षिक बैठकें

गांव स्तर पर पाक्षिक बैठके आयोजित की जाती है जिसमें गाँव की समस्याओं के समाधान हेतु बात होती है, गांव का एक्शन प्लॉन गांव के लोगों के साथ मिलकर बनाया जाता है, अप्रैल 2000 से अप्रैल 2001 तक 24 बैठके गांव स्तर पर की गयी है।

बालिका मेला

तरुण शाला स्कूलों में पढ रही, बालिकाओं के लिए 4 सितम्बर 2000 से 7 सितम्बर 2000 तक तीन दिवसीय बालिका मेले का आयोजन किया, जिसमें 55 तरुण शाला स्कूलों की सभी बालिकाएं व शिक्षकों ने भाग लिया, खेलकूद मिट्टी के खिलौने बनाना, चित्रकारी, कहानी, कविता, जादू का खेल, बच्चों को सिखाया गया, बालिका मेला में तरुण आश्रम में आयोजित किया गया।

जंगल, जंगली जीव का संरक्षण शिविर

जंगल व जंगली जीव बचाने हेतु विद्यार्थी एवं शिक्षकों को आगे लाने हेतु तीन कैम्पों का आयोजन किया ताकि विद्यार्थी व शिक्षकों में जंगल व जंगली जीवों के प्रति भावना जागृति हो। अलवर जिले के सैकण्डरी व सीनियर स्कूल के लगभग 30 स्कूलों के 300 बच्चों ने भाग लिया। शिविरों में शिक्षक विद्यार्थियों ने जंगली जीवों व जंगल बचाने का संकल्प लिया। कैम्प वन विभाग के साथ मिलकर सरिस्का में आयोजित किया गये। अब विद्यार्थी अपने-अपने गांव में जंगल व जंगली जीवों का संरक्षण पर्यावरण विद्यार्थी समूह बनाकर कर रहे हैं। अब तक 30 स्कूलों में 60 पर्यावरण विद्यार्थी समूहों का गठन किया जा चुका है।

काम करने की जागी लगन

कु० नन्दकंवर

कु० नन्द कंवर गांव डागरवाडा तह० जमुवा रामगढ़ की रहने वाली है। बी. ए. तक पढ़ी लिखी है पिछले एक साल से तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर खनन क्षेत्र रिक्शा जगतसर गांव की कामकाजी बालिकाओं को पढ़ाने व महिलाओं को जागृति कर उन्हें प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल, जंगल, जमीन, शिक्षा के प्रति अभिरूचि पैदा की है। वे बताती हैं मैंने तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर बहुत कुछ सीखा है और मेरे जीवन

में परिवर्तन आया है। मैं पहले गांव के लोगो से बातचीत नहीं करती थी लेकिन अब मैं गांव के लोगों से बातचीत करती हूँ गांव के लोग मुझे सम्मान देते हैं जिससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और काम की लगन जागी है। वे कहती है कि अपने हितो को कम करके जीवन भर समाज व राष्ट्र के हितों के लिये निष्काम कार्यरत रहना एक सच्ची साधना है। मनुष्य के हृदय में जीवन भर परहित में मानवीय संवेदनाओं का झरना बहता रहे।

अब दूर हुई झिझक तो हटा पर्दा

श्रीमती लक्ष्मी देवी

श्रीमती लक्ष्मी हींसला गांव की है वह 2 साल से तरुण भारत संघ के साथ जुड़ कर महिला संगठन बनाकर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का काम कर रही है। वे बताती है कि जब मैं तरुण भारत संघ के साथ जुड़ी थी तब मेरे अन्दर बहुत झिझक थी और गांव परिवार के लोग मुझ पर हँसते थे, लेकिन हिम्मत करके मैं महिलाओं को संगठित करने का काम करती रही तो मेरे अन्दर दिनों दिन क्षमता बढ़ी और गांव व परिवार के लोग मेरा काम देखकर मेरा सम्मान करने लगे हैं तथा मेरा सहयोग भी देने लगे और मैं अब अपने आस-पास के गांवों में काम करने जाने लगी हूँ।

अपने कार्यों से प्रसन्न

श्रीमती कजोड़ी देवी

श्रीमती कजोड़ी देवी राजौरगढ़ गाँव की रहने वाली है वे बताती है जब मैं तरुण भारत संघ से जुड़ी और संस्था में आने जाने लगी। तो इसे लोग अच्छा नहीं मानते थे और मुझे हमेशा अपने गांव की बात सुननी पड़ती थी लेकिन निकलने के बाद पीछे नहीं देखा आगे ही बढ़ती रही तो वे लोग अपने आप मेरा काम देखकर कहना बन्द किया और सहयोग देना शुरू किया। तरुण भारत संघ से जुडकर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सीखकर अब वह सरिस्का के अन्दर बसे गांवों की महिलाओं को संगठित कर प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण हेतु प्रेरित करने का काम कर रही हैं।

आगे बढने के लिये मिली ताकत

कु० अनिता

कु० अनिता गुढा चुरानी की रहने वाली है। गुढा मालियों की ढाणी में पिछले डेढ साल से काम काजी बालिकाओं को पढ़ाने व महिला समूह का काम कर रही हैं। इनका कहना है कि अगर मैं तरुण भारत संघ से नहीं जुडती तो इतने अच्छे कार्य करने का मौका नहीं मिलता मुझे आगे बढने की ताकत मिली है मैं अपने काम से बहुत खुश हूँ।

पानी ने दिया विश्वास

श्रीमती छोटी देवी

श्रीमती छोटी देवी सवाई माधोपुर जिले में महिलाओं को जागरूक करने का काम कर रही हैं। इन्होंने तरुण भारत संघ के साथ जुड़कर अपने इलाके में पहाडों में पानी रोकने हेतु टांके का निर्माण करवाया और डाकूओं को भी इस पानी के काम में लगाया है।

सपने हुए साकार

श्रीमती गुल देवी

श्रीमती गुल देवी सवाई माधोपुर जिले की रहने वाली है। एक साल से तरुण भारत संघ के साथ जुडकर अपने इलाके में जहाँ पर पानी की बहुत ही परेशानी थी। उन्होंने महिलाओं को जागृत कर उनको पानी के काम में लगाया और साथ ही महिला समूहों का गठन करके महिलाओं की जिन्दगी में आर्थिक मजबूती प्रदान की जिससे इस इलाके की महिलाओं में एक नई चेतना आई और वह अपने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में लग गयी हैं।

अक्टूबर 1999 से मार्च 2001 तक यू. एन. डी. पी. परियोजना के तहत किये गये कार्य

महिला जन जागृति हेतु शिविरों का आयोजन

तरुण भारत संघ द्वारा यू. एन. डी. पी. के लिये चयनित 150 गांवों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से महिलाओं को जाग्रति करने का काम किया गया है। इन गतिविधियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के रख रखाव हेतु महिलाओं को प्रोत्साहित किया गया ताकि महिलाऐं खुद आगे आये।

महिलाओं की ग्राम सभा में भागीदारी

ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी बढाने हेतु 100 गांवों में ग्राम सभा का गठन किया है जिसके तहत महिलाओं को प्रेरित कर उन्हे इनकी जानकारी दी गयी है।

महिलाओं द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

अकाल से मुक्ति पाने हेतु महिलाओं ने अपने-अपने गांव में श्रमदान इकट्ठा कराकर जोहड़ बनाने का काम शुरू किया है। अब तक तरुण भारत संघ के माध्यम से 200 जोहड़ एनीकट बनाने का काम हो चुका है। जिनमें से 100 जोहड़ महिलाओं ने सवाई माधोपुर व करौली जिलो में बनाये है, 70 जोहड़ अलवर जिले में महिला समूहों द्वारा बनाये गये हैं, तथा 30 जोहड़ जमुवारामगढ़ में बनाये गये हैं।

पदयात्राएं

साल में तीन पदयात्राएं की गयी, जिसमें पहली पदयात्रा अप्रैल, मार्च में ग्राम कोष, गांव सभा गठन हेतु, दूसरी पद यात्रा, जुलाई, अगस्त 2000 में ''पेड़ लगाओं पेड़ बचाओं'', तीसरी पदयात्रा ''जोहड बनाओं पानी बचाओं'' पदयात्रायें की गई।

पल्स पोलियो अभियान

बच्चों को पोलियो मुक्त बनाने हेतु पम्पलेट छपवा कर लोगों को जागृति करने हेतु, गाँव-गाँव में नुक्कड़ सभाओं का आयोजन किया गया। स्कूली बच्चों ने पल्स पोलियों मिटाओं रैलियाँ निकाली। पल्स पोलियो अभियान में महिला बचत समूह की सदस्याओं ने अपने-अपने गांवों में महिलाओं को जागृत करने का काम किया।

वातावरण निर्माण

150 गावों में वातावरण निर्माण हेतु नुक्कड़ नाटक एवं नुक्कड़ सभाओं का आयोजन किया गया। नुक्कड नाटकों का आयोजन 100 गांवों में किया गया, जिसमें स्कूली बच्चों व गांव लोगों ने भाग लिया। 50 गांव में नुक्कड़ सभाओं का आयोजन किया गया।

पंच, सरपंच प्रशिक्षण

नीमी गांव में दो दिवसीय पंच, सरपंच शिविर किया गया जिसमें जमुवारामगढ़, जयपुर के 29 गांव के 70 पंच, सरपंचों ने भाग लिया। पंच, सरपंचों की भागीदारी बढाने व उन्हें जागरूक बनाने हेतु यह प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में महिला पंच, संरपचों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

ग्वालों का प्रशिक्षण

चरवाहो के दो प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये, पहला शिविर राडा गांव में आयोजित किया गया, जिसमें 30 ग्वालों ने भाग लिया, उन्हें जंगल संरक्षण व नियम कानूनों की जानकारी दी गई, दूसरा ग्वाला शिविर ऊमरी गांव में आयोजित किया गया जिसमें 20 ग्वालों ने भाग लिया उन्हें जंगल के नियम कानून व संरक्षण के बारे में जानकारी दी गयी।

स्वास्थ्य शिविर

90 स्वास्थ्य शिविर आयोजित किये गये जिसमें जड़ी-बूटियों की जानकारी व उससे होने वाले उपचार के बारे में जानकारी दी गयी।

पशु चिकित्सा प्रशिक्षण

50 गांवों में 80 पशु स्वास्थ्य कैम्प लगाये गये। 41 कैम्प पशु के उपचार हेतु व लोगों को देशी जड़ी-बूटियों द्वारा पशु इलाज कराने हेतु प्रशिक्षण दिया गया, मांडलवास के क्षेत्र में हर महीने पशु कैम्प आयोजित किया जाता है इस क्षेत्र में पशु स्वास्थ्य केन्द्र संचालित है, वैद्यों द्वारा गांव-गांव जाकर पशुओं का इलाज किया जाता है।

महिला एनीमेटरों का विजिट

20 महिलाओं का दल ''सेवा'' अहमदाबाद का भ्रमण किया, वहां सेवा बैंक में जो ''सेवा संस्था'' द्वारा किये गये विभिन्न कार्यों को देखा जो केवल महिलाओं द्वारा ही संचालित किये जाते है। दूध, डेरी, मोमबत्ती बनाना, पत्तल दोने बनाना और इस तरह से नर्सरी का कार्य भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसके अलावा काजरी में कम पानी से अधिक उत्पादन वाले पौधे की जानकारी ली तथा अजमेर जोधपुर में समाज कार्य एवं अनुसन्धान केन्द्र में भी हस्तशिल्प का कार्य देखा।

दाई प्रशिक्षण

अप्रैल 2000 से अप्रैल 2001 तक दाईयों के तीन प्रशिक्षण किये गये, गांव में कार्यरत दाईयों के ज्ञान को बढाने हेतु और उनके काम में सफाई लाने हेतु और साथ ही टीकाकरण सम्बन्धी जानकारी दी गई और देशी जड़ी-बूटियों के उपचार के बारे में बताया गया। यह प्रशिक्षण डा० ज्योत्सना जी द्वारा दिया गया जिसमें लगभग प्रत्येक प्रशिक्षण में 80 महिलाओं ने भाग लिया तथा अपने गांवों में जाकर काम कर रही हैं।

अनुभव यात्रा

महिलाओं की तीन अनुभव यात्रा की गयी। भांवता निम्बी तथा हमीरपुर में थी। जिसमें अरवरी संसद सम्बन्धी पानी से हुये फायदे पर महिलाओं को जानकारी दी गयी तथा निम्बी में पानी की पर्याप्त मात्रा से फल एवं सब्जियों की पैदावरी किस तरह कर रहे हैं वहाँ महिलों ने सीखा।

महिला समूह का सम्मेलन

10 सम्मेलन किये गये जिनमें 2 सम्मेलन जमुवारामगढ़ क्षेत्र में और 4 सम्मेलन थानागाजी, राजगढ़ क्षेत्र में 4 सम्मेलन सवाई माधोपुर क्षेत्र में आयोजित किये गये। प्रत्येक सम्मेलन में लगभग 200 महिलाओं ने भाग लिया।

समूह सदस्यों की बैंक अधिकारियों के साथ बैठक

महिला समूह की सदस्याओं व बैंक के अधिकारियों के साथ बैठक की गयी। जिसमें दो बैठक तरुण भारत संघ में तथा दो बैठक रिवाली उपकेन्द्र में की गयी। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को बैंक से जोड़ना, एवं लेन-देन करना, ऋण की प्रक्रिया समझाना है। इस में क्षेत्रीय बैंकों के सभी कर्मचारी शामिल हुये। लगभग 200-500 महिला सदस्याओं ने बैठक में भाग लिया। जिसमें नार्वाड बैंक के सहायक निदेशक, टहला, थानागाजी, अजबगढ़, अलवर भरतपुर ग्रामीण आंचलिक व पंजाब नैशनल बैंक मैनेजरों ने भाग लिया।

बैंक से ऋण

इस वर्ष महिला समूह की सदस्याओं ने बैंक से ऋण लिया लगभग 3 समूहों ने दस-दस हजार रुपयों की राशि बैंक से ली गयी है।

महिला समूह की महिलाएँ बैंक मैनेजर व
तरुण भारत संघ कार्यकर्ता के साथ चर्चा करती हुई

महिला प्रेरक काजरी अनुसंधान केन्द्र में पौंधशाला की
जानकारी करती हुई

तरुण भारत संघ

भीकमपुरा, थानागाजी, अलवर-301022

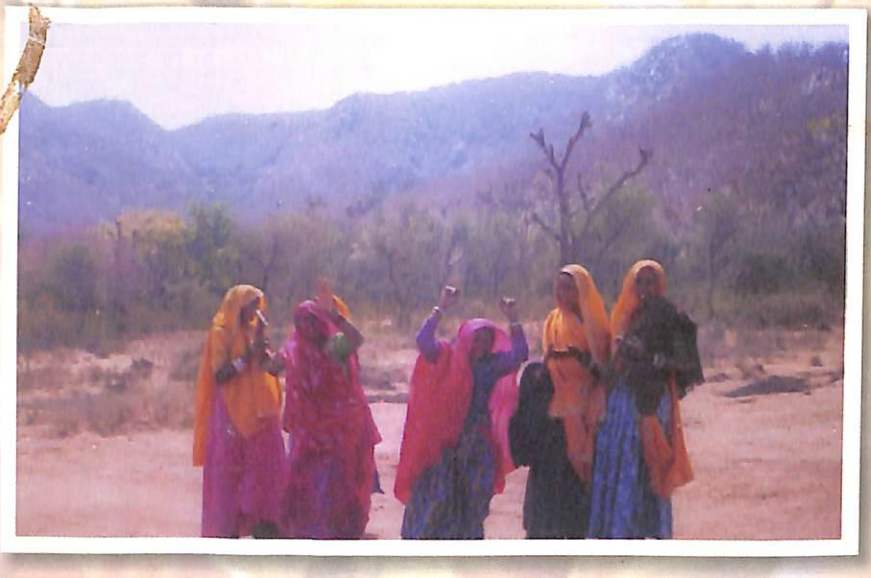

मुद्रक : सनप्रिन्ट्स, चर्च रोड़, अलवर फोनः 347669